Dt. 29.4.24

Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD Pg 1 B+

कक्षा - चौथी
विषय - हिंदी साहित्य

दिनांक - 29 अप्रैल, 24
अध्यापिकाएँ - श्रीमती रोमा रानी
श्रीमती सुमन शर्मा

पुस्तक - नवतरंग भाग - 4

पाठ - 3 'बैठो पीठ पर' (किस्सा)

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा चार की हिंदी साहित्य की पाठ्यपुस्तक के पृष्ठ 16 पर दिए पाठ-3 'बैठो पीठ पर' को पढ़ेंगे। यह पाठ आपको 29 अप्रैल, 24 को भेजा जा रहा है।

प्यारे बच्चो! आज हम पाठ-3 को पढ़ेंगे। अतः आप अपनी पाठ्यपुस्तक का पृष्ठ 16 खोलकर रख लें, साथ ही हिंदी की अभ्यास-पुस्तिका भी रख लें क्योंकि मैं कुछ कार्य पाठ के बीच में से लिखने को दूँगी। यदि आप पढ़ने व लिखने के लिए तैयार हैं तो मैं आपको पाठ 'बैठो पीठ पर' समझाने जा रही हूँ।

बच्चो! इस पाठ में बताया गया है कि जीवन में समझदारी, बुद्धिमानी और बोलने की कला से बहुत-सी मुसीबतों का हल निकल आता है।

तेनालीराम अपने इन्हीं गुणों के कारण राजा कृष्णदेव राय के प्रिय थे। अपनी सूझ-बूझ से वे अपने विरोधियों को कैसे परास्त कर देते थे। इस पाठ 'बैठो पीठ पर' के माध्यम से पढ़ेंगे।

बच्चो! एक दिन राजा कृष्णदेव की अँगूठी का बहुमूल्य हीरा महल में कहीं खो गया। महाराजा इससे बहुत परेशान हुए क्योंकि वह

Scanned with CamScanner

कक्षा- चौथी दिनांक - 29.4.24
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-3) अध्यापिकाएँ :-
श्रीमती सुमन शर्मा
श्रीमती रोमा रानी

वह हीरा महाराज को किसी संत ने दिया था और कहा था जब तक यह हीरा तुम्हारे पास रहेगा, तुम शत्रुओं पर विजय पाते रहोगे। उन्होंने सारे सैनिकों को महल में हीरा ढूँढने के लिए लगा दिया। जब हीरा न मिला तो उन्होंने महल में घोषणा करवा दी कि जो भी उस हीरे को ढूँढ़कर लायगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। पुरस्कार भी मुँहमाँगा ही दिया जाएगा। संयोग से हीरा महल के पहरेदार को मिल गया, तब जाकर महाराज की चिंता दूर हुई। उन्होंने खुश होकर पहरेदार से पूछा कि तुम्हें पुरस्कार के रूप में क्या चाहिए? उन्होंने पहरेदार से कहा, "माँगो, क्या माँगते हो? हम तुम्हें मुँहमाँगा इनाम देंगे।"

पहरेदार को समझ नहीं आया कि वह क्या माँगे? पहरेदार ने राजा से कहा, "अन्नदाता! मुझे कल तक का समय दें।" महाराज ने उसकी बात मान ली।

उसी दिन मंत्री के दिमाग में कुछ खुराफ़ात सूझी। उसने तुरंत सेनापति को बुलाकर कहा, "किसी भी तरह उस पहरेदार को फुसलाओ और कहो कि कल वह सम्राट से तेनालीराम की पीठ पर बैठकर बाज़ार की सैर करने की इच्छा ज़ाहिर करे।

"वाह-वाह! क्या बात कही है।" यह बात सुनकर सेनापति प्रसन्न हो गया। उसने अपने कक्ष में जाकर तुरंत पहरेदार को बुलाया और कहा "तुम्हें महाराज से वही माँगना है, जो हम कहें।"

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner

कक्षा- चौथी अध्यापिकाएँ- श्रीमती सुमन शर्मा
विषय- हिन्दी साहित्य (पाठ-3) श्रीमती रोमा रानी
दिनांक- 29.4.24

सेनापति ने उसे अपनी बात बताई, जिसे सुनकर पहरेदार डर गया और वह सेनापति की बातों में आ गया। दूसरे दिन महाराज के पूछने पर पहरेदार हाथ जोड़कर डरते-डरते बोला, "मैं तेनालीराम की पीठ पर बैठकर बाज़ार घूमना चाहता हूँ।"

महाराज ने अचंभित होकर कहा, "तुम होश में तो हो?" महाराज क्या करते! वचन में बँधे थे। उन्होंने तेनालीराम को बुलाकर सारा मामला बताया और पूछा, "हम तो बड़ी उलझन में फँस गए हैं तेनालीराम! तुम्हीं बताओ हम क्या करें?"

तेनालीराम ने कहा, "आप बिलकुल भी चिंता न करें महाराज! आप कल दरबार लगने दें। मैं सब ठीक कर दूँगा दूसरे दिन दरबार लगा। तेनालीराम उठे और भरे दरबार में बोले, "बंधुओ! जिस पहरेदार ने महाराज का हीरा ढूँढ़ा है, उसने मेरी पीठ पर बैठकर बाज़ार घूमने की इच्छा जताई है। मैं महाराज के वचन का मान रख कर इसे अपनी पीठ पर बैठाकर बाज़ार घुमाने ले जाऊँगा।" तब तेनालीराम ने पहरेदार से कहा, "आओ, मेरी पीठ पर बैठ जाओ।" यह सुनकर पहरेदार जैसे ही तेनालीराम की पीठ पर बैठने के लिए उठा और उन के गले में बाँहें डालकर उनकी पीठ पर सवार होने लगा। तभी वे बोले, "ठहरो! "तुमने मेरी पीठ पर बैठकर सैर करने की बात कही थी, गले में हाथ डालने की नहीं। बिना कुछ पकड़े बैठो।"

क्षणभर में ही दरबार का माहौल बदल गया। मंत्री और सेनापति के दमकते चेहरे बुझ गए। "बिना सहारे के पीठ पर कैसे बैठा जा सकता है!"—पहरेदार रुआँसा होकर बोला।

(पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner

DATE 29.4.24
PAGE No. 4

कक्षा - चौथी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ - 3)

अध्यापिकाएँ -
श्रीमती सुमन शर्मा
श्रीमती रोमा रानी

बच्चो! यहाँ तक आपने जो इस पाठ के बारे में पढ़ा है, वह सब को प्रसन्न करने वाला है। मैं आपसे अब कुछ प्रश्न पूछूँगी जो इस पाठ पर आधारित होंगे। आप इन प्रश्नों के उत्तर अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखने का प्रयास करेंगे।

प्रश्न- 1. महाराज कृष्णदेव राय क्यों परेशान थे?
प्रश्न- 2. महाराज ने बेचैन होकर क्या घोषणा करदी?
प्रश्न- 3. पहरेदार पर सेनापति ने क्या दबाव डाला?

प्यारे बच्चो! अब आपका लेखन कार्य का समय समाप्त हुआ। जो प्रश्न मैंने आपसे पूछे थे, अब मैं उनके उत्तर बता रही हूँ।

उत्तर- 1. महाराज कृष्णदेव राय की अँगूठी का हीरा जो कि बहुमूल्य था, महल में कहीं खो गया था इसलिए वे परेशान थे।
उत्तर- 2. महाराज ने बेचैन होकर घोषणा कर दी कि जो भी हीरे को ढूँढ़कर लाएगा, उसे मुँहमाँगा पुरस्कार दिया जाएगा।
उत्तर- 3 सेनापति ने पहरेदार पर दबाव डालते हुए कहा, "तुम्हें वही माँगना है, जो हम कहें।"

बच्चो! अब मैं आपको आगे का पाठ समझाने जा रही हूँ। महाराज कृष्णदेव राय के दरबार में मंत्री, सेनापति तथा अन्य लोग तेनालीराम से जलते थे, इसलिए वे हर समय उन्हें नीचा दिखाने के बारे में सोचते रहते थे।

(पृष्ठ-4)

Scanned with CamScanner

29.4.24

DATE
PAGE No. 5

कक्षा - चौथी विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-3)
अध्यापिकाएँ - श्रीमती सुमन शर्मा, श्रीमती रोमा रानी

लेकिन तेलानीराम अपनी बुद्धि से सबको परास्त कर देते थे। बिना पकड़े कैसे बैठूँ ? पहरेदार के कहने पर-

तेनालीराम ने कड़ककर कहा, "कैसे बैठा जा सकता है ? यह भी उससे पूछो, जिसके कहने पर तुमने मेरी पीठ पर बैठकर घूमने की बात कही थी।"

पहरेदार की नज़र फ़ौरन सेनापति की ओर उठी, मगर वह वहाँ नहीं था। पहरेदार बोला, "क्षमा करें महाराज!" उसने महाराज को पूरी बात बता दी। महाराज सेनापति की करतूत सुनकर आग बबूला हो उठे और आदेश दिया कि सेनापति को दरबार में आकर तेनालीराम से माफ़ी माँगनी होगी, तभी वे अपना आसन ग्रहण कर सकेंगे। तेनालीराम ने एक बार फिर अपनी बुद्धि का लोहा मनवा लिया था।

इस प्रकार बच्चो हमें इस कहानी के माध्यम से यह शिक्षा मिलती है कि हमें विषम परिस्थिति में भी संयम, समझदारी और बुद्धिमानी से काम लेना चाहिए। यह पाठ यहाँ समाप्त हो गया है। अब मैं आपको गृहकार्य करने को दूँगी।

गृहकार्य:-

- बच्चो! आप सब पृष्ठ 20 पर लिखे शब्दार्थ को ध्यान से पढ़ते हुए अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे।

- पृष्ठ-20 पर दिए पाठ बोध के प्रश्न 1 और 2 स्वयं हल करने का प्रयास करेंगे। प्रश्न 3 पुस्तक पर ही लिखेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ)

Scanned with CamScanner